

# साई चरणों में



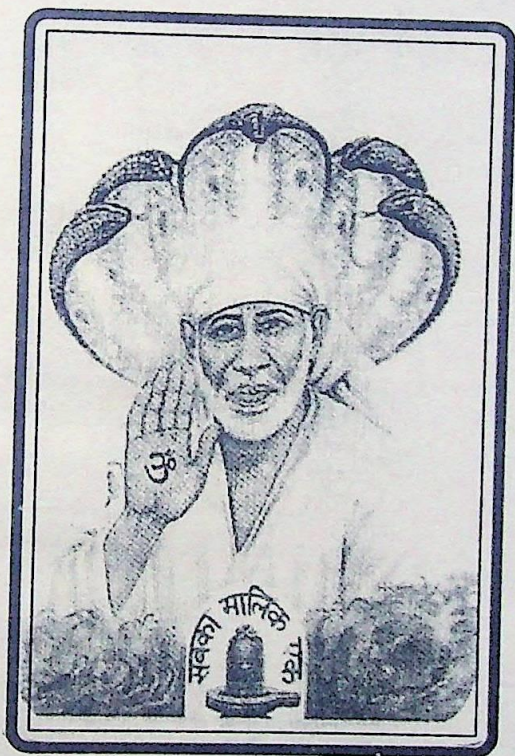
## डॉ. 'रोशन' सराफ





साई चरणां में

# साई चरणां में



डॉ. 'रोशन' सराफ





(© सर्वाधिकार डॉ 'रोशन' सराफ के पास सुरक्षित )

|                 |  |
|-----------------|--|
| पुस्तक का नाम : | 'साई चरणों में'  |
| लेखक :          | डॉ 'रोशन' सराफ   |
| अक्षर संयोजन :  | आई आई एल एस,<br>डी.टी.पी सेंटर, 471-A, Sec-2 मुद्दी, जम्मू।<br>रिंकू कौल # 94191-36369 |
| प्रकाशन वर्ष :  | 2011 ई.  |
| प्रथम संस्करण : | 500 प्रतियाँ   |
| मूल्य :         | 100/- रुपये  |
| मुखपृष्ठ :      | सूरज सराफ और गोलडी सराफ  |
| मुद्रक :        | नवदुर्गा प्रिंटिंग प्रेस पटोली जम्मू,<br>Mob.: 9419124691                              |

पुस्तक प्राप्ति का पता—

1. डॉ रोशन सराफ,  
सूर्या डुपलैक्स, अपार्टमेंट्स, त्रिकुटानगर, जम्मू।  
मोबायिल : 9419142652
2. विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय,  
बोहडी पट्टा, जम्मू 180002
3. कश्मीर सहायक समिती, त्रिकुटानगर, जम्मू।

## विषय सूची

‘साई चरणों में’ - एक अवलोकन : प्रो. (डॉ.) महाराजकृष्ण भरत : 1

|                                      |    |
|--------------------------------------|----|
| कुछ शब्द अपने बारे में : रोशन सराफ : | 7  |
| 1. आदि आराधना                        | 10 |
| 2. सावन—भादों की शीतल लहर            | 12 |
| 3. साई                               | 14 |
| 4. साई जाम                           | 16 |
| 5. साई लग्न                          | 18 |
| 6. ठाकुर                             | 20 |
| 7. प्रेम की भेंट                     | 23 |
| 8. हाजरी                             | 24 |
| 9. साई सुमरण                         | 25 |
| 10. सर खम                            | 27 |
| 11. साई दरबार                        | 29 |
| 12. एक ईश्वर                         | 31 |
| 13. साई रहमत                         | 32 |
| 14. सत गुरु साई                      | 34 |
| 15. साई—आस                           | 36 |
| 16. सवाली                            | 38 |
| 17. खोज                              | 40 |
| 18. मोहे अभिलाषा                     | 41 |
| 19. साई प्रकाश                       | 43 |
| 20. मंगल—वर्षा                       | 45 |
| 21. साई दीदार                        | 47 |
| 22. शाहे शहनशाह                      | 49 |
| 23. श्रद्धा और सबूरी                 | 51 |
| 24. साई बोल                          | 53 |
| 25. साई हरे                          | 55 |
| 26. साई चरणों में                    | 57 |
| 27. संत साई राम                      | 58 |
| 28. आपके शरण                         | 60 |
| 29. जामे—मारिफत                      | 62 |
| 30. कृपालु निरंजन                    | 63 |
| 31. आरती                             | 65 |
| 32. भगवान साई नाथ                    | 66 |
| 33. साई दामन में                     | 67 |
| 34. साई महाराज                       | 68 |
| 35. पूजा का अवधान                    | 69 |
| 36. सजदे में                         | 71 |



## ‘साई चरणों में’ - एक अवलोकन

श्रद्धा एवं प्रेम के संयोग से भक्ति का भाव मन में संचरित होता है। भक्ति एक ऐसा प्रेम का प्याला है जिसमें घुला विष भी अमृत हो जाता है। प्रेम दीवानी मीरा के लिए तो विष का प्याला भी अमृत बन गया था। अबोध भक्त धना जाट के आमरण अनशन की दृढ़ प्रतिज्ञा के समक्ष तो भगवान को पत्थर में से प्रकट होने के लिए विवश होना पड़ा था। कभी प्रह्लाद के बालपन की भक्ति के वश में आकर ईश्वर को नरसिंह अवतार के रूप में खम्भे में से अवतरित होना पड़ा था। ईश्वर तो भक्तों के वश में है। जहाँ भी मनसा—वाचा—कर्मणा उनके नाम का स्मरण होता है, वह वहाँ सदैव विद्यमान रहते हैं। ईश्वर तो सृष्टि के कण—कण में व्याप्त है, उन्हें देखने के लिए उस मन की आंखें चाहिए, जो निर्मल—स्वच्छ हो, विषय वासनाओं और छलकपट से रहित हो, तभी तो संत कबीरदास हमें हाथों का मनका छोड़कर मन के मनके को फेरने के लिए प्रेरित करते हैं, क्योंकि बाह्य आडम्बर पूर्ण भक्ति मनुष्य को लक्ष्य तक नहीं पहुँचाती वरन् दिग्भ्रमित करती हैं। कबीर की वाणी में:

माला फेरत जग मुआ, मिटा न मन का फेर।

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर॥

शुद्ध मन से की भक्ति ही भक्त को सद्मार्ग की ओर ले जाती है, जिसके फलस्वरूप उसे अपने ही भीतर परमात्मा के दर्शन होते हैं।



व्यवसाय से चिकित्सक और हृदय से कवि के रूप में जनसाधारण में विख्यात डॉ. रोशन सराफ भी ऐसे ही भक्त हैं जिनपर श्री साई बाबा और भगवान गोपीनाथ की असीम अनुकम्पा है। अपने आराध्य देव के प्रति अपार श्रद्धा और असीम प्रेम लिए इस भक्त कवि ने साई बाबा के चरणों में 36 भजन लीलाएँ समर्पित की हैं, जो इस सद्य प्रकाशित पुस्तिका 'साई चरणों में' संकलित हैं। पुस्तिका के शीर्षक से ही स्पष्ट होता है, कि कवि को अपने आराध्य के प्रति अटूट श्रद्धा एवं आस्था है, साई के चरणों की अमृत धारा में डुबकियाँ लगाने की तीव्र उत्कंठा है, साई का नाम स्मरण कर पार उतर जाने की अभिलाषा है, अपनी चित्तवृत्तियों को ब्राह्म्य आडम्बरों से हटाकर अंतर्मुखी करने का सद्प्रयास है:

चित्त का दर्पण मैला कुचैला  
राक्षस रावण विचार हठीला  
राम—राम का अनुग्रह पा वासना सुधारूँ  
तर जाऊँ हो सागर पार

\* \* \*

काशी, मथुरा, शिरडी, वृन्दावन  
हर घर में तू हर—हर शिव निरंजन  
साई—साई पुकारूँ भक्त बन जाऊँ  
तर जाऊँ हो सागर पार।

डॉ. सराफ की भक्ति उस जलधारा की भांति गतिशील है जो यह नहीं जानती कि सीमाएँ क्या होती हैं, ऊबड़—खाबड़ मार्गों से कैसे बहना है, कंकड़, विशाल शिलाओं से टकरा कर क्या हो सकता है, वह असीमता



का चोला पहन कर बहना ही अपना कर्म समझती है। 'साई चरणों में' की भजन—लीलाएँ असीमता का चोला पहने हुए हैं जहाँ व्यक्ति को धर्म, जाति, पंथ एवं सम्प्रदाय की नज़र से नहीं, साई बाबा के भक्त के रूप में जाना जाता है। जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर, साम्प्रदायिक सौहार्द के दृष्टिकोण से ही हम इन भजन—लीलाओं एवं आरती का रसास्वादन कर सकते हैं, तभी हम साई बाबा के कृपा पात्र भी बन सकते हैं। दो उदाहरण द्रष्टव्य है:—  
ओम् नमो भगवते साई नाथाय, नारायणाय नमो नमः।  
राम स्वरूपाय श्री कृष्णाय, नारायणाय नमो नमः॥  
काशी, मथुरा जिसके आंगन में, प्रांगण में द्वारिका माई।  
पावन धाम शिरडी कहलाये, नारायणाय नमो नमः॥

\* \* \*

दूर से आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में  
इक शमा जलाये, हज़ूर के हज़ूर में  
तेरी बारगाह में हैं हज़ारों सजदे में  
सर झुका के आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में

कहीं भक्त श्री राम एवं श्री कृष्ण के रूप में साई की आरती उतारते हैं तो कहीं भक्त उन्हें हज़ूर कह कर उनकी बारगाह में सजदे करते हैं। सब का हित चाहने वाले, समद्रष्टा, सम्भाव रखने वाले साई बाबा जगत् कल्याण हेतु मृत्युलोक में शिरडी गांव में नीम के वृक्ष के नीचे बालक रूप में प्रकट हुए। उन्होंने स्वयं कहा है कि जो भी व्यक्ति सच्चे मन से मेरी शरण में आएगा, मैं उसके सभी कार्य पूर्ण करूंगा। जो मुझे जिस रूप में मानेगा, मैं उसे उसी रूप में दर्शन दूंगा।



साईं के भवन में राम और रहीम में किंचित मात्र भी भेद नहीं है। इसीलिए साईं को पूजने वाले हर धर्म, मजहब, सम्प्रदाय के लोग हैं। हिन्दू उन्हें श्रीराम, कृष्ण एवं शिव की मूर्ति में पाकर भजते हैं तो मुस्लिम अल्लाह एवं रहीम के रूप में सजदा करते हैं:—

जिसके माथे नाम अल्लाह हो,  
मन में राम होठों पे कृष्ण हो  
साईं कीर्तन कर, तन मन अर्पण साईं चरणन।

डॉ. सराफ की भांति करोड़ों लोग साईं की भक्ति की धूनी मन में रमाए हुए हैं। जब उन्हें कोई हिन्दू कहता था, तो वे कुरान—ए—शरीफ की आयते सुनाते थे और जब कोई मुसलमान कहकर अभिहित करता था तो वे वेद, पुराण उपनिषदों के श्लोक सुनाकर सब को दंग कर देते थे। वास्तव में हर समुदाय को एक सूत्र में पिरोने का उनका अभीष्ट था। वे व्यक्ति को राम और रहीम के भेद से अभेद की स्थिति तक पहुंचाने की चेष्टा करते थे। उनका यह संदेश तो जगजाहिर है—‘सब का मालिक एक है।’

आपके सदके हज़ार जान,  
यह आस्तान मेरा दीन—ओ—ईमान।  
न हिन्दू न मुसलमान, न ईसाई,  
आप की खुदाई का जग शौदाई॥

\* \* \*

लब पे आप के अल्लाह की अज़ान  
तान मुरली की सीने में  
कर दे करम हम पे या इलाही  
आप की खुदाई का जग शौदाई



शिव के शंख गूंज में आप,  
आप निरंजन दुख भंजन।

साई बाबा ने अपने भक्तों के कष्ट निवारण के लिए कई चमत्कार किए। वह भक्तों का कष्ट स्वयं पर लेकर भक्तों के घावों पर स्नेह लेप लगाते थे। श्रद्धा और सबूरी (सहन शक्ति) उनका मूल मंत्र है:—

ऐसे गुरु के चरणों में, क्यों न मन—प्राण निवार दूँ।  
श्रद्धा और सबूरी जिसके मन में,  
'रोशन' होके जीवन संवार दूँ।  
वह कभी राम तो कभी श्याम,  
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।

'साई चरणों में' की भजन—लीलाओं में साई दर्शन की पिपासा है, जोगन बनकर लगन लगाने की आस है। कण—कण में बाबा के दर्शन की अनवरत साधना है। साई बाबा भक्तकवि की दिल की धड़कन है, दर्द की दवा उनके बारगाह की भस्म भभूती हैं, साई चरणों में तन—मन अर्पण करने की उत्कंठा है—

साई भजन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन  
साई चिन्तन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन

\* \* \*

भस्म भभूती, वह राख दरबार की  
दुआ बारगाह की वहीं दवा दर्द की  
साई जागरण कर, तन—मन अर्पण साई चरणन।

'साई चरणों में' की भाषा प्रत्येक धर्म, पंथ की भाषा का मिश्रण है। इसी कारण हिन्दी—हिन्दुस्तानी के साथ उर्दू—फारसी के शब्दों का भी इन भजनों में समावेश है।



यह पुस्तिका विविध भाषाओं की एकता की प्रतीक है। यह साई के भक्तों की भाषा है।

66 वर्षीय डॉ. रोशन सराफ हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी तथा अंग्रेज़ी भाषा में सृजनारत हैं। इनकी कश्मीरी में 'ग्वरु पूजा', 'लोलु ओश' और अंग्रेज़ी में Rhythmic verses पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सद्यः प्रकाशित पुस्तक के अतिरिक्त वर्तमान में डॉ. सराफ की हिन्दी, कश्मीरी और अंग्रेज़ी में 6 पुस्तकें 'अमृत वर्षा' (हिन्दी), 'मॉज', 'ग्वरु पादन तल', 'अस्न खंगाल' (कश्मीरी), Images and Incarnations, Emotions (अंग्रेज़ी) शीघ्र प्रकाशित हो रही हैं। इनकी रचनाएँ शुद्ध विद्या, प्रकाश, नाद, कोशुर समाचार, वितस्ता, पंचतरणी, आलव, मिलच़ार जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही हैं तथा अंग्रेज़ी समाचार पत्र डेली एक्सेलेशियर में भी इन की रचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं।

डॉ. सराफ केवल भजन—लीलाओं को रचते ही नहीं हैं बल्कि उन्हें स्वरो में सजाकर गाते भी हैं। भक्त की भक्ति ऐसी ही बनी रहे और पराकाष्ठा तक पहुंचे, ऐसी हम कामना करते हैं। साई चरणों के कृपा पात्र बनने के लिए हम मन से धना जाट की तरह विश्वास बनाए रखें। बाबा अपने भक्तों को अपने श्रीचरणों की अनन्य भक्ति दें, सदा उनका तेजस्वी, मनोहर स्वरूप आंखों में बसा रहे और हर व्यक्ति में उनके दर्शन हों, इसी आशा और विश्वास के साथ—

प्रो. (डॉ.) महाराजकृष्ण भरत

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

राजौरी।



## कुछ शब्द अपने बारे में

गुलाशन से निकल कर जब किसी ने मुझ से पूछा कि यह कैसी 'मिज़ाज की तबदीली, कहाँ एक डाक्टर, एक खिलाडी, एक तैराक, एक कोह पैमा और एक मुसविर और कहाँ कलमकार।' एक मीठी से हस्सी होंटू पर लिये में ने जवाब में कहा, 'माहोल की तब्दीली, फज़ा की शिदत और उमर के डलते हुये साये'। नब्ज़ टटोलते टटोलते में इन्सानी ज़िहनु को बी टटोलता रहा। दिल की दडकनू की तशाखीस करते करते दिलू की कस्क, टीस और नज़ाकत को समझने लगा, महसूस करने लगा और बर एक कवि, एक अदीब बन गया।

दरअसल 1962 में 'एस पी कालेज' में 'एफ एस सी' का विद्यार्थी होने पर मैं ने अपनी दो नावल 'आतिश' और 'पायल' हिंदुसतानी में लिखीं, लेकिन खेल और खेल की मसरूफियात की वजह से उन का तकमील न होसका। उसी दौरान मैंने अंगरेज़ी में कवितायें लिखनी शुरू की जिसका इंकशाफ मैं ने अपनी अंगरेज़ी किताब "Rhythmic Verses" में किया है, लेकिन वहीं खेल की मसरूफियात और फिर मयडिकल की पडाई की वजह से इतना समय ही न मिला कि में लिखलने के सिलसिले को मुकमिल करके अपने कल्म के ज़ोर और ख्यालू की वुसत को आप के सामने पैश करता। प्रवासी होने पर जहाँ हम कश्मीरी पंडित अपना घरबार, अपनी जन्म भूमी और रिशायूं मुन्यूं के आसथा की सुगंध को छोड़ वनवास में आगये, वहाँ मुझ



जैसे कितने ही अपने कलम की नोक को कोरे कागज़ पर तैज़ करगये। शायद इसलिये कि हम पडे लिखे होने पर बी काम—व—काज से महरूम रहे और सोंच—व—फिकर से दोचार होकर ख्यालूँ के भवंडर में गुम हुये। एक अदीब, एक कवि किसी कालेज में सीख कर नहीं आता। शायरी एक ऐसी चिंगारी है जो एक कलमकार के ज़िहन में कुदरत की देन है और जो मुनासिब समय पर एक उबलता हुआ लावा बनकर उगल आता है। यह एक ठोठ मारती हुआ सागर की लहरू का वह तूफान है जो फर्श से उठकर उर्श की दहलीज़ तक अपने मौजू का अहसास करा के स्वर्ग के दरवाज़े पर दसतक देता है और उस पैदा शुदा आवाज़, उस झंकार से कई शब्दु का जन्म होता है और वही शब्द सर्गम के तारू को छेड कर गीत, गज़ल और नज़्म बन जाती है। 'सोंच—व—फिकर' की दुन्याँ में घुम होकर एक कवि 'मालिक' के शर्ण में आकर अपने आंसवू की माला पिरोकर प्रभु के चरणों में शब्दु के फूल बँट चडा देता है। यह एक इंसानी फितरत है जो एक कलमकार अपनी कविता का पहला पन्ना मालिक के हज़ूर में पैश करता है। यहीं मैं ने बी किया जब मैं ने कश्मीरी, हिन्दुसतानी और अंगरेज़ी ज़बान में अपना पहली अकीदत 'भगवान जी' के नज़र किया।

मैं ने अभी तक तीन किताबें लिखी, 2001 में कश्मीरी में भगवान गोपीनाथ पर 'ग्वर पूज़ा', कश्मीरी में ही 2004 में 'लोल आश' और 2008 में Rhythmic Verses अंगरेज़ी में (जो मार्च 2008 में रिलीज़) शाया की और अंकरीब ही कई और किताबों का विमोचन करने वाला हूँ।



मैं ने अपने ख्यालूँ की 'खानी को कूजे' में समेटने की कोशिश की है। नफसियाती और धार्मिक सुगंध से दिमाग को महकाने की कोशिश की है। झीलूँ में लहरू की उमंग—रंग रंगीले परिंदू की मीठी बोली और हुसन की अलहड जवानी के घुंघुरूवू की आवाज़ से अपने शब्दु को सात सुरू में उतार कर सब के सामने पैश करने की कोशिश की और यही आरिजू है कि ज़िन्दगी की आखरी सांस तक अपने गीतों और आवाज़ से सामयीन का दिल जीत सकूँ।

*जिसकी उनालियाँ टटोलती रही नब्ज़ साला साल  
वह अब लिख रहा है नुसख्य दीवानगी'*

'साई चरणों में' की किताब गीतों का गुल्दसता है जो मैं ने अपने ख्यालूँ के गुलशन से चुन—चुन कर साई चरणों में बैट किया है। मेरी हिंदी या यूँ कहे कि हन्दोसतानी में पहली कोशिश है जो मैं ने समेट कर गीत माला बना कर संसार के सभी भक्तों को साई महाराज के प्रसाद के तोर पर खिलाना और पिलाना चाहता हूँ। भक्तूँ का मेरा यह उपहार पसंद आयेगा, इस का मुझे पूर्ण विश्वास है। कोतहियाँ तो होंगी ही, परंतु मेरी प्रार्थना है कि इन गीतु की सुगंद से साई के ध्यान में मदहोश होकर इस भक्ति रस चुरा लें और साई मय होजाये।

डॉ. 'रोश' सराफ  
(रोशि रोशि)

## आदि आराधना

हे गजानन ईश नन्दन ईश नन्दन,  
 शरण आपके चरणन में।  
 हे विनायक गौरी नन्दन गौरी नन्दन॥  
 शरण आपके चरणन में॥०॥

सूर्य में आपकी लाली,  
 सुबह की थाली में केसर चन्दन।  
 कण—कण करे आपका अभिनन्दन॥  
 शरण आपके चरणन में॥०॥

मैं शिव प्रेम के फूल लेकर,  
 फैला कर दामन बारगाह में।  
 ध्यान में बैठ कर शत शत नमन॥  
 शरण आपके चरणन में॥०॥

श्रद्धा के इन्द्र—धनुषी रंग,  
 अंग अंग में भक्ति की उमंग।  
 आस्था के सुमन करूँ अर्पण॥  
 शरण आपके चरणन में॥०॥

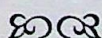


आपके नाम से दिन उजले,  
सुलझें उलझे कर्म दोष।  
होंठों पे जग के आपका चिन्तन॥  
शरण आपके चरणन में॥०॥

श्री गणेश सर्वसिद्धि योग,  
भोग आपका मिटाये रोग।  
एक दन्त स्मरण से दुःख निवारण॥  
शरण आपके चरणन में॥०॥

आगाज़ आरती का न कोई पूजा,  
दूजा नाम आपके सिवा।  
आप त्रिलोक के आदि आराधन,  
शरण आपके चरणन में॥०॥

सारी सृष्टि के आप विभूषण,  
'रोशन' आप है ज्ञानेश्वर।  
शिव, शक्ति के ज्ञाननन्दन॥  
शरण आपके चरणन में॥०॥



## सावन—भादों की शीतल लहर

अर्श—ओ—फर्श पर एक ही नाम,  
धाम जिसका शिर्डी में।  
वह कभी राम तो कभी शाम,  
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में॥

वह साधु फटे पुराने में,  
जानी अनजानी राहों में।  
प्रेम का झोला हाथों में,  
एक अगोचर मीठी बातों में॥  
वह कभी राम तो कभी शाम,  
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में॥०॥

वह सावन भादों की शीतल लहर,  
मेहर प्रेम की बरसाये।  
पावन नाम की सुगंध शाम—ओ—सहर,  
कहर लोभ और मोह का मिटाये।  
वह कभी राम तो कभी शाम,  
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में॥०॥



वह सुबह की निर्मल लाली में,  
बागों की मस्त हरियाली में।  
वह महकती बेला डाली डाली में,  
बसंत की पवन मतवाली में।  
वह कभी राम तो कभी शाम,  
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में॥०॥

ऐसे गुरु के चरणों में,  
क्यों न मन प्राण निवार दूँ।  
श्रद्धा और सबूरी जिसके मन में,  
'रोशन' होके जीवन सँवार दूँ।  
वह कभी राम तो कभी शाम,  
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में॥०॥

ॐ



## साई

साई तेरो नाम लेकर मुक्त हो जाऊँ,  
 तर जाऊँ भवसागर पार।  
 साई चरणों की धूल लेकर मुक्त हो जाऊँ॥  
 तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजा,  
 तेरे आंगन में सब है सांझा।  
 साई द्वार की दृष्टि पाकर तृप्त हो जाऊँ॥  
 तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

राम तू, कृष्ण तू, अल्लाह तू,  
 जिस का न कोई उसका मौला तू।  
 साई धाम की झलक पाकर फिर तरस जाऊँ॥  
 तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

गिन लूँ कुकर्म कि साँसें गिन लूँ,  
 कर्म हीन दुःखों से पीडित हूँ।  
 साई कृपा इक बार पाकर संतुष्ट हो जाऊँ॥  
 तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥



मन में खोट तन में कोढ़,  
गम अज्ञान के लाखों करोड़।  
साई पथ का उबटन पाकर दर्द भूल जाऊँ॥  
तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

चित्त का दर्पण मैला कुचैला,  
राक्षस रावण विचार हठीला।  
राम राम का अनुग्रह पा वासना सुधारूँ॥  
तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

काशी, मथुरा, शिर्डी, वृन्दावन,  
हर घर में तू हर हर शिव निरंजन।  
साई साई पुकारूँ भक्त बन जाऊँ॥  
तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

सजदे हजार किये बारगाह में आपके,  
होके मसरूर भक्ति में आपके।  
साई नाम का जाम पीकर मस्त हो जाऊँ॥  
तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

जिस घर में प्रभु पूजा तेरी,  
'रोशन' सारी अँधियारी होगी।  
साई चरणों में माथा टेक कर कर्म सुधारूँ॥  
तर जाऊँ भवसागर पार॥०॥

## साई जाम

राम साई श्याम साई, साई साई प्रणाम साई।  
श्याम साई राम साई, साई साई प्रणाम साई॥

आपके पावन चरणों में है, निर्मल झील का अमृत जल,  
अनुपम झरनों में है, निर्मल झील का अमृत जल।  
लाख दुःखों की दवा साई, साई साई प्रणाम साई॥

द्वारिका माई के साई नन्दन, बंधन आप से श्रद्धा का,  
दरबार आपका प्रेम वृन्दावन, बंधन आप से श्रद्धा का।  
उज्ज्वल धाम सुबह ओ—शाम साई, साई साई प्रणाम साई॥

जो भी आया शरण तुम्हारे, बिगड़े काज सुधर गये सारे,  
सच्चे पीर की दरगाह के द्वारे, बिगड़े काज सुधर गये सारे।  
व्याकुल मन का आराम साई, साई साई प्रणाम साई॥



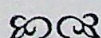


आपके जाप की मीठी कूक, तड़पत मनकी मिटाये हूक,  
जन्म जन्म की अमिट भूख, तड़पत मनकी मिटाये हूक।  
हर शब्द हरि पैगाम साई, साई साई प्रणाम साई॥

हीरे मोती किस काम के मेरे, गाँठ लिये हैं मंत्र तेरे,  
शिर्डी के संत मैंने शाम सवेरे, गाँठ लिये हैं मंत्र तेरे।  
तेरो नाम सच्चा इनाम साई, साई साई प्रणाम साई॥

अपनी भक्ति में भक्तों को रंग दे, अपनी प्रीत का खज़ाना भर दे,  
मंगलमय हो ऐसा वर दे, अपनी प्रीत का खज़ाना भर दे।  
सिद्ध कर दे सब काम साई, साई साई प्रणाम साई॥

मदिरा ऐसी पिला दे साई, दाएँ—बाएँ दिखे बस साई,  
ज़र्रा—ज़र्रा हो 'रोशन' साई, दाएँ—बाएँ दिखे बस साई।  
साई जाम पिला दे साई, साई साई प्रणाम साई॥



## साई लग्न

तेरी सूरत मन में समाई,  
तोसे लगन लग गई साई।  
बाबा यह कैसी लीला रचाई,  
तोसे लगन लग गई साई॥

चाँद से मुख से सूर्य का तेज,  
पावन कदमों में इंद्र—धनुषी सेज।  
साई चरणों की मैंने आस लगाई,  
तोसे लगन लग गई साई॥

जिस ओर देखूँ तुझे ही देखूँ,  
देखों राम तो कभी कृष्ण देखूँ।  
प्रभु जी यह कैसी प्रीत जगाई,  
तोसे लगन लग गई साई॥

सजदे में तेरे ज्ञानी ध्यानी,  
प्रेम का दरस तेरा नूरानी।  
झूठे बंधन से मांगे रिहाई,  
तोसे लगन लग गई साई॥

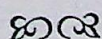


ये रिश्ते—नाते पानी की खानी,  
न बचपन बुढ़ापा ना रहे जवानी।  
यह जीवन सारा अजब खुदाई,  
तोसे लगन लग गई साई॥

ईद भी तेरी होली तेरी,  
काशी शिर्डी मथुरा भी तेरी।  
तुझ पे ठाकुर जाऊँ मैं वारी,  
तोसे लगन लग गई साई॥

युगों युगों से प्यासे होंठ,  
भक्ति से पिला प्रेम के घूँट।  
आपकी रहमत का जग शैदायी,  
तोसे लगन लग गई साई॥

‘रोशन’ कर दे लौ दीपक की,  
आपके होते बुझ न जाए।  
तेरे नाम की मैंने शमा जलाई,  
तोसे लगन लग गई साई॥



## ठाकुर

साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।  
साई चरणों की आस लगी रे,  
आस लगी रे आस लगी रे॥

ठाकुर मेरे शीतल चन्दन,  
महके त्रिभुवन होके पावन,  
साई दरबार की सुगंध महकी रे,  
सुगंध महकी रे, सुगंध महकी रे।  
साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥

ठाकुर मेरे बसे चिंतन में,  
तन में मन में बसे कण—कण में,  
साई—साई रटने की चाह जगी रे,  
चाह जगी रे चाह जगी रे।  
साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥



ठाकुर मेरे राम की सूरत,  
 खूबसूरत सी कृष्ण की मूरत,  
 साई आंगन की राह हरी रे,  
 राह हरी रे, राह हरी रे।  
 साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
 प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥

ठाकुर मेरे दिल की धड़कन,  
 प्रेम की छन—छन तरंग सम्पूर्ण,  
 साई पूजन की थाह बड़ी रे,  
 थाह बड़ी थाह बड़ी रे।  
 साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
 प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥

ठाकुर मेरे निर्मल सोहन,  
 मोहनी चितवन राधा के मोहन,  
 साई गुण—गान की महफिल सजी रे,  
 महफिल सजी रे, महफिल सजी रे।  
 साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
 प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥

ठाकुर मेरे ओम् की गुंनजन,  
अलख निरंजन सुलक्षण सुदर्शन,  
साई सत् संग की सरगम बजी रे,  
सरगम बजी रे, सरगम बजी रे।  
साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥

ठाकुर मेरे अलौकिक विभूषण,  
'रोशन' होवे सारा जीवन,  
साई भगवन की धूम मची रे,  
धूम मची रे, धूम मची रे।  
साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
प्यास लगी रे प्यास लगी रे॥

साई दर्शन की प्यास लगी रे,  
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।  
साई दर्शन की आस लगी रे,  
प्यास लगी रे आस लगी रे॥

ॐ





## प्रेम की भेंट

शरण आया मैं चरणन में, सांझ सवेरे दर्शन में।

प्रेम की भेंट लेके नैनन में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

झोली मेरी खाली—खाली, द्वार पे आया तेरे सवाली।

कर दूँ क्या अर्पण में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

प्रेम का रस प्याली में, प्रीत का व्यंजन थाली में।

खिला—पिला के पूजन में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

भक्त की पुकार आँसू में, कण—कण में उसकी साँसों में।

तेरा ही नाम हर धड़कन में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

छल कपट से भरी पडी, मानव की द्वेष कड़ी।

क्या क्या करूँ वर्णन मैं, सांझ सवेरे दर्शन में॥

हेरा—फेरी रीत ही जग की, काली—करनी बुरे—संग की।

जो है सो मन—दर्पण में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

तू राम कृष्ण सखा साई, सुन लो प्रभु मेरी दुहाई।

रंग श्रद्धा का भर दो तन—मन में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

ज्ञान—ध्यान की जोत जला कर, 'रेशन' तेज उस में मिला कर।

प्रज्वलित हो मेरे कण—कण में, सांझ सवेरे दर्शन में॥

## हाजरी

दूर से आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।  
इक शमा जलाये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

तेरी बारगाह में, हैं हज़ारों सजदे में।  
सर झुका के आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

कुछ तो आँसू लिये, कुछ रोये कुछ होंठ सिले।  
कुछ सुनाने आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

तेरे सिवा कोई और नहीं, कोई सनम हमदम नहीं।  
फैला के दामन आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

ढूँढने गुज़र गई, ढह गई मासूम जान।  
मिलन की आस लगाये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

दे दूँ क्या बादशाह, भेंट तुझ को शहनशाह।  
दिल हथेली पे लाये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

क्यों हो चुप रे सनम, हम पे कर दो कुछ करम।  
हम मनाने आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥



आप ही की शान में, आन—बान और ईमान में।  
ले के मुरादे आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

‘रोशन’ सी महफ़िल में, हैं सैकड़ों मयकदा।  
पीने जाम आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में॥

ॐ

## साई सुमरण

साई भजन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन।  
साई चिन्तन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन॥

वह ही सारे कष्ट निवारे, वह ही भवसर पार लगाए।  
साई सुमरण कर, तन मन अर्पण साई चरणन॥

वह ही राम वही कृष्ण हमारे,  
भक्तों के वह प्रेम—दुलारे।  
साई पूजन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन॥

भस्म भभूती, वह राख दरबार की,  
दुआ बारगाह की वही दवा दर्द की।  
साई जाग्रण कर, तन—मन अर्पण साई चरणन॥

उसके दर पे जो आये सवाली,  
लौट के जाये न हाथ वह खाली।

साई दर्शन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन॥

जिसके माथे नाम अल्लाह हो,  
मन में राम होठों पे कृष्ण हो।

साई कीर्तन कर, तन मन अर्पण साई चरणन॥

भूले—बिसरे भूखे—प्यासे,  
दर पे तेरे नत मस्तक हैं सारे।

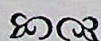
साई साई कर, तन—मन अर्पण साई चरणन॥

काली रैन में फैलें उजाले,  
'रोशन' करदे अज्ञान के काले।

साई गुण—गान कर, तन—मन अर्पण साई चरणन॥

तन—मन अर्पण साई चरणन, साई भजन कर।

साई चिन्तन कर, तन मन अर्पण साई चरणन॥





## सर खम

सीस झुकाये पलकें बिछाये चरणों में,  
आस लगाये, प्यास बुझाने चरणों में।  
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥

द्वारे तेरे आये हम, लाखों ग़म आँखें पुरनम,  
तुझको रिझाने तुझको मनाने चरणों में।  
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में॥  
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

क्या—कहूँ, क्या ना कहूँ, तीखे सितम कितने सहूँ,  
दिल के फसाने तुझे सुनाने चरणों में।  
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में॥  
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

झूठे बन्धन तोड़ के सारे, तेरे सहारे थके—हारे,  
क्या क्या बतलायें दिल संभलाने चरणों में।  
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में॥  
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

दिल में छिपा के दर्द के छाले, पाले हैं जख्म हज़ारों,  
दर—दर के सताये मुरझे—मुरझाने चरणों में।

आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।

ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

जल में तू थल में तू, राम भी तू कृष्ण भी तू  
आंगन महकाने फूल बिखराने चरणों में।

आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में॥

ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

नज़र में तुझको प्राण करदूँ दो, जो दिया सारा वारदूँ,  
छत्र चढ़ाने तुझे सजाने चरणों में।

आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में॥

ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

बन के शमा तेरी बारगाह में, 'रेशन' होके महफ़िल में,  
दामन फैलाने दीप जलाने चरणों में।

आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में॥

ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्॥०॥

ॐ



## साई दरबार

तेरे आंगन में हम तेरे आंगन में हम।  
 श्रद्धा के फूल लेके आंगन में हम।  
 तेरे प्रांगण में हम, तेरे प्रांगण में हम।  
 नंगे पाँव साई प्रांगण में हम॥

दूर से आये तेरे सवाली।  
 खाली हाथ न जायें हम॥  
 तेरे दामन में हम, तेरे दामन में हम।  
 नंगे पाँव साई प्रांगण में हम॥

अर्ज हमारी सुन लो शहनशाह।  
 बादशाह तू सारे जग का है॥  
 तेरे आराधन हैं हम, तेरे आराधन हैं हम।  
 नंगे पाँव साई प्रांगण में हम॥

भूखे—प्यासे थके—हारे, तेरे द्वारे आये हम।  
 तेरे वृन्दावन में हम, तेरे वृन्दावन में हम॥  
 नंगे पाँव साई प्रांगण में हम॥

नाम मैं तेरे कितने गिन लूँ।  
 मान लूँ तुझको कृष्ण और राम॥  
 तेरे चरणन में हम, तेरे चरणन में हम।  
 नंगे पाँव साई प्रांगण में हम॥

पास न आवे दुःख और संकट।  
 निकट न आवे कोई उलझन॥  
 तेरे पूजन में हम, तेरे पूजन में हम।  
 नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम॥  
 दूनी रमा के क्यों ना मैं बैटूँ।  
 बैटूँ ध्यान में सुबह और शाम॥  
 तेरे चिंतन में हम, तेरे चिंतन में हम।  
 नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम॥  
 गूँज है तेरे नाम की साईं।  
 दाएँ बाएँ तू ही तू॥  
 तेरे जागरण में हम, तेरे जागरण में हम।  
 नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम॥  
 अज्ञान के काले प्रभु जी मिटा ले।  
 करदे उजाले 'रोशन' तू॥  
 तेरे भक्त भक्त हैं हम, तेरे भक्त हैं हम।  
 नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम॥  
 तेरे आंगन में हम, तेरे आंगन में हम।  
 श्रद्धा के फूल लेके आंगन में हम॥  
 तेरे प्रांगण में हम, तेरे प्रांगण में हम।  
 नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम॥

ॐ



## एक ईश्वर

ऐसा पैगम्बर भेज धरती पर,  
नाम जिसका सब से पावन।  
ईश्वर अल्लाह जिसके होठों पर,  
दरस जिसका मन—भावन॥

शैखजी कहते हैं अल्लाह मस्जिद में,  
दैरो—हरम में उसका नूर।  
ब्राह्मण कहता है भगवान मन्दिर में,  
जल—थल में उसी का ज़हूर॥

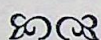
किसी ने रंग दी मांग लाली से,  
किसी ने माथे पे दे दिया दाग।  
किसी ने भक्ति के अनुराग से,  
किसी ने नश्वर को किया त्याग॥

धर्म के नाते धारा अमृत की,  
बहती क्या तेरे आंगन से।  
यह बारगाह केवल श्रद्धा की,  
जो मिले भक्तों को स्मरण से॥

बट चुका है मानुष दीन—धर्म पे,  
है बिखरा—बिखरा सा खून।  
मदहोश है झूठे भरम से,  
सर पे अज्ञान का जनून॥

सजदे में सभी हैं आसमान के नीचे,  
मांगें अपनी अपनी खैर।  
सर झुकाये हैं अखियाँ नीचे,  
पासबाँ के सामने अपना कौन गैर॥

मन राम हो कृष्ण ही मन,  
मन ही अल्लाह ईश्वर मन।  
प्रेम जोत से 'रोशन' हो मन,  
कण—कण में प्रेम की हो अगन॥



## साई रहमत

तेरे द्वारे तेरे प्यारे,  
शाम—सवेरे साई साई पुकारे।  
बिन तेरे प्रभु जी कौन दुलारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

सीस झुका के है दर पे आये,  
तेरे चिंतन में सुध बिसराये।  
आपकी रहमत से हों वारे—न्यारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥



तुझ बिन कौन करे सुनवाई,  
प्रिय भक्तों की सुन लो दुहाई।  
मन से पीड़ित दीन दुखियारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

भँवर में जीवन खाये हिचकोले,  
डूब न जायें हौले—हौले।  
नैया हमारी लगादे किनारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

जीवन—पथ पर काँटे बिछे हैं,  
दहकते अंगारे झुलस रहे हैं।  
थके हारे मुसाफिर बेचारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

यूँ ही जन्म व्यर्थ न होवे,  
सोवे न आलस में कुंभकर्ण।  
अनमोल पूँजी ऐसे न हारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

तेरे नाम की जग में शोहरत,  
कृष्ण की मूरत में राम की सीरत।  
मात—पिता हो आप हमारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

इक ज़र्रा धूल में पड़ा हूँ,  
धुँए के गुब्बार से लड़खड़ा रहा हूँ।  
'रोशन' सी लौ अब तेरे सहारे,  
शाम सवेरे साई साई पुकारे॥

## सत गुरु साई

सत गुरु साई राम हमारे, जग के दुलारे काज संवारे।  
एक अगोचर सब से न्यारे, जग के दुलारे काज संवारे॥

कृष्ण की बंसी की तान तुम हो,  
राम—बाण की पहचान तुम हो।  
सृष्टि के प्रीतम प्यारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥

प्रेम का तेज टपके मुख से,  
सब्र का प्याला छलके नैनों से।  
इक—इक ज़र्रे को यूँ ही निहारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥

तेरे पावन पैर जो पड़ गये,  
मिट गये दुःख दर्द बिना दवा लिये।  
थाम लिये जिस ने चरण तुम्हारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥



काशी मथुरा और वृन्दावन,  
तेरे धाम पे तीर्थ सम्पूर्ण।  
जायें तो मिट जायें कष्ट सारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥

भक्ति के जाम पिला भर—भर के,  
प्रेम—सागर में डूब जायें अब के।  
पलकें बिछाये हैं दीन—दुखियारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥

वासना का ढेर इक आतश—फिशान है,  
कुकर्म जीवन का धुंधला निशान है।  
हम सब अज्ञानी तृष्णा के मारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥

ग्रहण के साये ठाकुर मिटा दे,  
अंधेरी रातों में चाँदनी निखार दे।  
भक्तों को दिखा दे 'रोशन' नज़ारे,  
जग के दुलारे काज संवारे॥

३०८३

## साई—आस

कब से बैठा हूँ आस लगाये,  
हे दीन—बंधु दरस दिखा दे।  
आँखों में आँसू लिये दामन फैलाये,  
हे दीन—बंधु दरस दिखा दे॥

यूँ ही जीवन व्यर्थ बिताया,  
गंवाया पल—पल इधर—उधर।  
शरण तेरे चरणों में सीस झुकाये,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥

काम क्रोध के प्याले नशीले,  
जहरीले घूँट अज्ञान के।  
तुझ बिन प्रभुजी कौन सिखलाये,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥

कौरव मन के वासना से लथ—पथ,  
मत पापों को अपनाये।  
साई रहमत ही पथ निहारे,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥



कर दे करम एक ठाकुर मुझ पर,  
शामो—सहर धरूँ बस तेरा ध्यान।  
तेरे ही नाम से जन्म सफल हो जाये,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥

थका—हारा आया तेरे दर पर,  
कहर कर्मों का मिटाने।  
तू ही राम तू ही कृष्ण कहलाये,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥

ठाठे मारे यह जीवन—सागर,  
गागर में डोलू लहरों पै।  
बन के माही पार उतारे,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥

काले अंधियारे लोभ और मोह के,  
रह रह के करे व्याकुल मुझे।  
'रोशन' किरण से तन—मन नहलाये,  
हे दीन बंधु दरस दिखा दे॥

ॐ

## सवाली

शरण तेरे चरणों में आया सवाली,  
खाली हाथ न लौटाना।  
संवारने को आया मैं अपनी बेहाली,  
खाली हाथ न लौटाना॥

कुछ देर तो जी लूँ भुला के ग़म,  
पुर-नम आहों के रिसते ज़ख्म।  
नैनों में नीर लिये आया सवाली,  
खाली हाथ न लौटाना॥

मैं और मेरी तनहाइयाँ खामोश हैं,  
खामोश हर उमंग सर्दओ-बेहोश है।  
दर पे आस लिये आया सवाली,  
खाली हाथ न लौटाना॥

अकेला सफ़र में चला जा रहा हूँ,  
ढूँढता रहा हूँ मंज़िल के निशान।  
तेरी चौखट पे आया सवाली,  
खाली हाथ न लौटाना॥



धूल में लथ—पथ थका—हारा,  
 मारा—मारा जैसे आवारा।  
 झोली फैला के आया सवाली,  
 खाली हाथ न लौटाना॥

उम्र झुरियों में लड़खड़ाते कदम हैं,  
 बे—बसी में हमदम न कोई हमकदम है।  
 मुरादे ले के आया सवाली,  
 खाली हाथ न लौटाना॥

अंधेरों में गुम—सुम इक और नाम है,  
 'रोशन' उजाले में मायूस शाम है।  
 गुमनाम दहर से आया सवाली,  
 खाली हाथ न लौटाना॥

ॐ



## खोज

कितने ही सजदे किये, तेरी बारगाह में।  
कितने जलाये दीये, तेरी बारगाह में॥

तेरी दरगाह पे कितनी बार सरखम रहे।  
फिर भी बे-इतमीनान रहे, तेरी बारगाह में॥

झोली तो झोली दामन भी फैला चुके।  
फिर भी खाली हाथ रहे, तेरी बारगाह में॥

कहते थे सभी इकबार ईमान तो ला।  
फिर भी बेईमान रहे, तेरी बारगाह में॥

वह कौन जिन की पूरी होती हैं मुरादें दिल की।  
फिर भी नामुराद रहे, तेरी बारगाह में॥

कसम तेरी किसी और को माना नहीं पूजा नहीं।  
फिर भी नादार रहे, तेरी बारगाह में॥

कोशिश तो हजार की इक झलक मिलने को।  
फिर भी मायूस रहे, तेरी बारगाह में॥



इक उम्र गुज़र गयी तेरी खोज में ऐ साई।  
फिर भी हम आते रहे, तेरी बारगाह में॥

कुछ देर शमा बन के 'रोशन' हुये जलते—जलते।  
फिर भी अंधेरों में रहे, तेरी बारगाह में॥

ॐ

## मोहे अभिलाषा

आपके चरणों में, सज के आई हीरों के अंबार।  
आपके शरण में, पीने आई अमृत—धार॥

आपके नाम की अजर—अमर सुगंध,  
मंद—मंद पवन स्वर्ग की।  
आपके शरण में सज के आई पावन द्वार,  
पीने आई अमृत—धार॥

सुबह की लाली छू कर पथ को,  
नत मस्तक होकर भास्कर।  
आपके शरण में पहनाने आई भक्ति का हार,  
पीने आई अमृत—धार॥

आपका प्रेम सब से अनमोल,  
तोल—तोल के बे मोल।

आपके शरण में करने आई आपका दीदार,  
पीने आई अमृत—धार॥

मैं तो बाँवरी प्रेम धुन में,  
गुन—गुनाती आप ही का नाम।  
आपके शरण में लेने आती प्रेम फुँहार,  
पीने आई अमृत—धार॥

आपका नाम हज़ारों में चुनके,  
त्याग के आये लोभ और मोह।  
आपके शरण में सुनाने आई दुखड़े हज़ार,  
पीने आई अमृत—धार॥

आपके दरस की मोहे अभिलाषा,  
आशा आपकी सदा 'रोशन'।  
आपके शरण में दौड़ी आई होके बेकरार,  
पीने आई अमृत—धार॥

४०२



## साई प्रकाश

साई पावन चरणों में बैठ कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।  
गुरु चरणों का अनुग्रह पाकर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

झुलसती पीड़ दहकता पाप,  
संताप कर्मों का उगले अंगारे।  
साई द्वार की धूल मल कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

लोभ मोह की तपती प्यास,  
उदास कर के जगाये त्रास।  
साई बारगाह का अमृत पी कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

दीन—दुःखी फिरूँ मारा—मारा,  
थका—हारा बे सहारा मैं।  
साई—रहमत का इनाम लेकर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

कितने ही सजदे किये मसजिद में,  
मंदर में टेक कर झुकाया सर।  
साई नाम का जाप जप कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

रफीक तू शफीक तू गरीब—नवाज़,  
साज़ कृष्ण का मीरा की आवाज़।  
साई शाम की अराधन कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

जो भीख के मांगे और बाटे सब में,  
उस में समाया दया का सागर।

साई—भक्ति का प्रसाद खा कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

आप कृपालु आप करुणा—कर,  
समन्दर आप सब्र का।  
साई राम के गुण गा कर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

अंधी अंधियारी वासना की गलियाँ,  
कलियाँ तृष्णा की काँटों भरी।

साई प्रकाश 'रोशन' होकर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥

साई पावन चरणों में बैठकर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।  
गुरु चरणों का अनुग्रह पाकर,  
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ॥



## मंगल—वर्षा

मंगल वर्षा कर दे साई,  
 साई नाम की हरियाली हो।  
 सुख की बेली हो दाएँ—बाएँ,  
 साई नाम की हरियाली हो॥

इंद्र—धनुष आपके संग,  
 अंग—अंग में बिखराये रंग।  
 रहमत की फुहारें बरसा दो साई,  
 साई नाम की हरियाली हो॥

शबनम के सीने में प्रेम की बूंदें,  
 अखियाँ मूँदे ईर्ष्या की ओस।  
 दुःख के बादल हटा दो साई,  
 साई नाम की हरियाली हो॥

प्रेम की बरखा बरसे दिन—रैन,  
 नैन करें तेरा इंतजार।  
 अपनी लगन जगादो साई,  
 साई नाम की हरियाली हो॥

आप ही आप सुबह की लाली में,  
 बसंत की मतवाली हवा में आप।  
 सुगंध विश्वास की महका दो साई,  
 साई नाम की हरियाली हो॥

शिव के शंख की गूँज में आप,  
आप निरंजन दुःख— भंजन।  
आप ही राम और कृष्ण हो साई,  
साई नाम की हरियाली हो॥

मोहन की मुरली के अनन्त सुरों में,  
मीठे अधरों के मधुर बोल।  
गीता का उपदेश सुना दो साई,  
साई नाम की हरियाली हो॥

शंकर की जटा में आप चंद्रमा,  
रमा के चरणों का खिला कंवल।  
प्रेम की गंगा बहा दो साई,  
साई नाम की हरियाली हो॥

ज्ञान ध्यान की 'रोशन' किरण से,  
ग्रहण की कालिख मिटा दो।  
अज्ञान पथ को निंखारो साई,  
साई नाम की हरियाली हो॥

ॐ



## साई दीदार

मुझे सपने में साई दीदार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये।  
नींद हो ऐसी साई साकार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

मैं तो मदहोश आपकी मस्ती में,  
कण—कण में आपका खुमार।  
भक्ति का प्याला सरशार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

बीता कल और आज इतिज़ार में,  
बे—करार मैं आपके बिना।  
जलवा दिखाने का इक़रार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

हे दया—सागर अर्ज सुन लो,  
गिन लो मुझ को चरणों का दास।  
सहरा में अनुग्रह की फुहार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

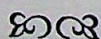
मुरली के सीने में सात छेद,  
भेद सरगम के सुरों में।  
साई—मंत्र की झंकार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

साई ही राम साई ही श्याम,  
साई नाम गूँजे सुबहओ—शाम।  
हर ज़र्रा साई ओमकार हो जाय,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

कर्म का मारा थका हारा,  
सारा जीवन इक डूबता तारा।  
विनति कृपा की स्वीकार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

वरदान में ठाकुर दे ज्ञान और ध्यान,  
अज्ञान पथ को मिटा दे।  
अंधियारा जीवन 'रोशन हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥

मुझे सपने में साई दीदार हो जाये,  
साई में साई दरबार नज़र आ जाये।  
नींद हो ऐसी साई सांकार हो जाये,  
साई ही साई दरबार नज़र आ जाये॥





## शाहे शहनशाह

शाहों के शाहे शहनशाह,  
बादशाह दो—जहान के तुम।  
अर्श—ओ—फर्श के शाहे शहनशाह,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

फीका लागे आफताबे दरखशाँ,  
गौहरे—बदखशाँ तारों का कहकशाँ।  
साई चरणों की मोहे अभिलाषा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

मन्दिर मस्जिद में शैख व ब्राह्मण लूटे,  
टूटे फूटे दावे झूठे।  
साई बारगाह की जागे आशा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

राम कृष्ण को एक आकार में,  
साकार देखा आप में।  
साई को शिव ने आप तराशा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

द्वारे—द्वारे परख लिये सारे,  
आप अगोचर सब से न्यारे।  
साई मंत्र ही जग की भाषा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

ब्रज में श्याम अयोध्या में राम,  
धाम शिर्डी का अनुपम।  
साई मिटाये भक्तों की निराशा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

मैं तो प्यासा आपकी भक्ति में,  
महकती सुगंध सबूरी की।  
साई महिमा प्रेम परिभाषा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

आपके नाम की 'रोशन' दमक,  
चमक हज़ारों सूर्य की।  
साई नाम मिटाये अज्ञान की हताशा,  
बादशाह दो—जहान के तुम॥

ॐ



## श्रद्धा और सबूरी

द्वारिका माई के हे संत साई,  
आपकी खुदाई का जग शैदाई।  
आप ही राम आप कृष्ण साई,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

आपके सद्के हज़ार जान,  
यह आस्तान मेरा दीन—ओ—ईमान।  
न हिन्दू न मुसलमान, न ईसाई,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

शाहूँ के शाह शाहे शहनशाह,  
हर दिशा में आपकी गूँज।  
दैरोहर्म में आपकी बादशाही॥  
आपकी खुदाई का जग शैदाई॥

चौखट पर विभूति की सुगंध,  
मंद—मंद महक बारगाह की।  
दर्द—मंदों की सुन लो दुहाई,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

जिस ने नाम लिया श्रद्धा से आपका,  
संताप का अग्न शबनम होवे।  
खिलेगी धूप जहाँ बदरा छाई,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

आपके नाम पे मैं बलिहारी,  
वारी जाऊँ कदमों में।  
अर्श—ओ—फर्श पे आपकी पार साई,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

लब पे आपके अल्लाह की अज़ान,  
तान मुरली की सीने में।  
कर दे करम हम पे या इलाही,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

सब्र का सागर मुट्ठी में आपके,  
शाप के विष को अमृत पिलाये।  
वाह रे बाबा की 'रेशन' आशनाई,  
आप की खुदाई का जग शैदाई॥

ॐ



## साई बोल

साई स्मरण से मधुर कर वाणी,  
साई बोल साई, साई बोल प्राणी।  
शिर्डी के संत की अनमोल कहानी,  
साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

नंगे पाँव झोला हाथ में,  
साथ में खजाना अनुग्रह का।  
वह तो साधू सदाचारी जिसका न सानी,  
साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

सब्र का सागर बंद मुट्ठी में,  
मन में प्रेम का अमृत—कुंड।  
बूंद—बूंद पिलाये ज्ञान का पानी,  
साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

न तख्त—ओ—ताज वह फिर भी बादशाह,  
शहनशाह चारों दिशाओं का।  
मस्तक पर सूर्य का प्रचंड नूरानी,  
साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

फकीर कहे रुपय—पैसा गर्दे फ़ानी,  
 यह तो आनी जानी पानी की खानी।  
 अनन्त भक्ति की इक अनुपम निशानी,  
 साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

निष्ठा आस्था अनुराग के पासंग,  
 अंग—अंग में श्रद्धा की तरंग।  
 निष्काम प्रेम की अजर अमर खानी,  
 साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

वासना तृष्णा अज्ञान के दो—राहे,  
 बाहें फैलाये लोभ और मोह।  
 माया छलावी यह तो हवा तूफानी,  
 साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

साई दर पे जो भी आये,  
 जाये न खाली हाथ वह।  
 वह 'रेशन' योगेश्वर वो अपार दानी,  
 साई बोल साई, साई बोल प्राणी॥

ॐ



## साई हरे

साई हर हर साई हरे, ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम।  
मन प्राण ध्यान धरे, ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

यह पावन अक्षर भक्ति की पहचान,  
मीठी तान श्रद्धा की।  
सुरीली गूंज साँझ—सवेरे,  
ज़र्रे—ज़र्रे में साई नाम॥

कलियुग के स्वामी सुखदाई,  
द्वारिका माई के संत साई।  
अनुपम जाप से जगत निखरे,  
ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

अनुग्रह बूंदे प्रेम—पावस की,  
हवस की अगन मिटाये।  
ज्ञान—वर्षा की शबनम बिखरे,  
ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

आप भूखे पर भक्तों को खिलाये,  
पिलाये जाम, अनुरागी।  
तोड़ के लोभ और मोह के पहरे,  
ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

फट्टे—पुराने में परख न प्राणी,  
नूरानी सूरत की मूरत मस्तानी।  
मन—दर्पण में पहचान चेहरे,  
ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

जो प्रेम का आंचल वह सब्र का सागर,  
शरण में जा कर चिंतन कर।  
सहरा हो जायेंगे हरे भरे,  
ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

राम और कृष्ण का अलौकिक रूप,  
धूप सुनहरी 'रोशन' सी।  
मिटायें अंधेरे घने गहरे,  
ज़र्रे ज़र्रे में साई नाम॥

ॐ



## साई चरणों में

साई मैं तो बलिहारी, बलिहारी, वारी मैं चरणों पे।

साई चौखट पे, मैं बलिहारी, बलिहारी, वारी मैं चरणों पे॥

मन्दिर—मन्दिर द्वारे द्वारे, सारे तीर्थ घूमे मारे मारे।

अब आपकी बारगाह में दीन दुखयारी, वारी मैं चरणों पे॥

आपके ध्यान में हरे कृष्ण को, राम को आपके ज्ञान में।

मोहनी सूरत पे मैं दिल हारी, वारी मैं चरणों पे॥

गंगा यमुना मथुरा काशी, साक्षी प्रेम और श्रद्धा के।

आपके नाम की मैं पुजारी, वारी मैं चरणों पे॥

फटे पुराने में नूरानी चेहरा, सेहरा खुरशीद की किरणों का।

पूजे आपको दुनिया सारी, वारी मैं चरणों पे॥

हिंदू मुस्लिम आपके दो नैना, गहना आपकी जीनत का।

मुख—मंडल पे मुस्कान प्यारी, वारी मैं चरणों पे॥

मन में लब पे एक ही बोली, होली ईद प्रेम हमजोली।

आपकी खुदाई सब से न्यारी, वारी मैं चरणों पे॥

हे ठाकुर अर्ज सुन लो, कर लो 'रेशन' मेरे पथ को।

मैं भी तो बन लूँ जोगन तुम्हारी, वारी मैं चरणों पे॥

## संत साई राम

हरि हरि बोले जो सुबह—व—शाम,  
 उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।  
 मन में कृष्ण होठों पे राम,  
 उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

द्वारिका माई में राम लौट आये,  
 भक्तों के रोम—रोम में कृष्ण समाये।  
 वाणी मीठी जिसका प्रेम निष्काम,  
 उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

कर्म से संत जो धर्म से संत,  
 आदि प्रेम है प्रेम ही अन्त।  
 निर्मल शीतल जिसका धाम,  
 उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

भाव से शीतल कामना मंगल,  
 आचार—विचार धर्म का हर पल।  
 ईश्वर अल्लाह का जो दे पैगाम,  
 उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

प्रेम शब्द जिसके सत्य की संजीवनी,  
 चखे वह जाने योग कुंडलिनी।  
 दया कृपा का जो दे इनाम,  
 उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥



जो प्याला पिये तेरे सत्—संग का,  
लागे लगन उसे साई अंग संग का।  
हो जाये मुक्त वह पी के जाम,  
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

प्रसाद जो बांटे ज्ञान—ध्यान का,  
निस्वार्थ सेवा त्याग साधना का।  
साई जिसका अनुपम नाम,  
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

सुन के ज्ञान मस्त हो जायें,  
अनमोल बोल में सुध—बुध खो जायें।  
मले युगों का सिद्ध परिणाम,  
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

चित दर्पण में घोर अंधेरा,  
'रोशन' होके कर दो सवेरा।  
तड़पत मन को जो दे आराम,  
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम॥

ॐ

## आपके शरण

आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर,  
ध्यानेश्वर ज्ञानेश्वर आप ही आप।  
आप करुणा—कर योगेश्वर, सर्वेश्वर,  
ईश्वर जगदीश्वर आप ही आप॥

सत्—गुरु साई नाथ भगवन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन।  
जगत गुरु शत शत करूँ नमन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

कर्म—धर्म की गर्दिश में,  
मैं, मैं में खो गया उलझन में।  
खोल दे गाँठ काट दे बन्धन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

सावन रंगीला ओस से लथ—पथ,  
ऐहरावत बरसाये ओले पथ पे।  
हर लो पाप—शाप हे दुःख भंजन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

तेरे दरस की कामना दिन रैन,  
नैन तरसे आये न चैन।  
पार उतारे बस तेरा चिंतन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥



सुगंध पावन नाम की अजर अमर,  
शाम—ओ—सहर महके चेतन।  
नाम स्मरण से खिले मन—प्रांगण,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

कौन सा मन्दिर कौन सा आस्तां,  
पासबाँ भक्तों का आप जैसा।  
सुदर्शन सुलक्षण आप निरंजन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

क्यों न होलूँ आपका दीवाना,  
परवाना आपकी बारगाह का।  
मैं तेरे शरण करदूँ आराधन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

धुंधला धुंधला मन—दर्पण,  
'रोशन' होके मिटा ले ग्रहण।  
उज्ज्वल होके जैसे शीतल चन्दन,  
अर्पण जीवन तेरे चरणन॥

ॐ

## जामे—मारिफत

जगत् गुरु की दहलीज़ पर, हज़ारों सर सजदे में।  
ले के मुरादे आये दरपर, शाम—ओ—सहर अकीदे में॥

सर पे केसरी मलमल की  
कंवल की रौनक जलाल पर॥  
यह खुदा का बंदा कहते सभी।  
मुश्के—नाफ़ा रवाँ जमाल पर॥

यह बादशाह सर से पाँव तक।  
मस्तक पर रंगे—कोसे—कज़ा॥  
हर सू हज़ूर की शीतल महक।  
दस्तक दे रही है बारगाह की फ़िज़ा॥

बैठे हैं क़तार में अकीदतमंद।  
अर्जमंद की लासानी रहमत को॥  
ज़ख्मे पिल्हाँलिये दर्दमंद।  
मंद—मंद खुशबू मलने को॥

गूँज साई नाथ आपकी।  
शाम की तान खुशबुओं के पैग़ाम की॥  
वह खनक जामे मारफत की।  
छलकते जाम के मदमस्त कवाम की॥



आपके दामन के नीचे।

अखियाँ मीचे माया का मोर॥

आप आगे जग आपके पीछे।

चुपके खींचे कर्म की डोर॥

इक और करम कर दे भगवन।

पावन चरणों में रहने दे॥

अज्ञान के काले कर दे 'रोशन'।

धन प्रेम का भीख में दे॥

ॐ

## कृपालु निरंजन

मैं दर पे आपके साई नाथ भगवन,

कर दूँ क्या मैं अर्पण।

दयालु कृपालु साई निरंजन,

कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

जेब से खाली तेरे दर पे,

सर पे लिये अज्ञान का बोझ।

तेरे द्वारे मैं निर्धन,

कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

मैं लोभी राह को भूल गया,

सो गया दिन के उजाले में।

धुंधला—धुंधला मन—दर्पण,

कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

कर के भ्रमण तेरे शरण,  
चिंतन करने को आया हूँ।

तेरे चरण और मेरा पूजन,  
कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

दरिद्र मन चित अभिमानी,

फ़ानी जग की अजब कहानी।

अल्हड़ अहंकार का कर ले दहन,

कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

तेरा ही नाम हर दिशा में,  
वर्षा में तू इंद्र—धनुष।

पावन सुहावन तेरा दर्शन,  
कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

जगत गुरु ध्यान धरो,

हरो कष्ट और संकट मेरे।

तुझ बिन कोई और न साधन,

कर दूँ क्या मैं अर्पण॥

आया मैं तेरे आंगन सवाली,  
थाली अनुपम प्रेम की खिला।

शत—शत नमन 'रोशन' चरणन,  
कर दूँ क्या मैं अर्पण॥



## आरती

ओम् नमो भगवते साई नाथाय, नारायणाय नमो नमः।

राम स्वरूपाय श्री कृष्णाय, नारायणाय नमो नमः॥

काशी मथुरा जिस आंगन में, प्रांगण में द्वारिका माई।

पावन धाम शिर्डी कहलाये, नारायणाय नमो नमः॥

इंद्र—धनुष के सात रंग, अंग—अंग रंग दे आपके।

सूर्य की किरणें तेज निखारे, नारायणाय नमो नमः॥

विनायक की लाली ललाट पर, सर पर केसरी रुमाल ओढ़ कर।

चंद्र—धर आपके मन में समाये, नारायणाय नमो नमः॥

नंगे पाँव और जोगी—चोला, झोला लिये भोला फकीर।

श्रद्धा का बादशाह भक्तों को निहारे, नारायणाय नमो नमः॥

सब्र का सागर जिसके मन में, कण कण में फूटे शीतल अमृत।

अनुग्रह का प्याला प्रेम से पिलाये, नारायणाय नमो नमः॥

पंच—तत्व में आपकी गूंज, अरूज पे आप विराजमान।

चारों दिशा में साई नज़र आये, नारायणाय नमो नमः॥

मैं आपकी आरक्षणा में मदहेश साई चित में समायी 'रेशन' मूत।

साई—सुगंध रोम—रोम महकाये, नारायणाय नमो नमः॥

## भगवान साई नाथ

जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।  
अपनी बारगाह में बुला कर, जाम भक्ति का पिला लो॥

मैं तो धूल में, फूल नरगिस का मुरझा पड़ा।  
पाप शाप मिटा कर, पावन प्रेम में संवार लो॥

जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

भक्त चहक रहे हैं, गा रहे हैं गुण आपके।  
प्रेम की महक फैला कर, स्मरण में मदहोश कर लो॥

जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

मोहे लागे धुन साई नाथ की, दो—जहाँ के हज़ूर की।  
हे बादशाह अनुग्रह कर, अपने चरणों में बिठा लो॥

जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

छोड़ कर गये मेरे अपने, सपने ही सपने आँखों में।  
अपनी भक्ति का भक्त बना कर, दुलार कर निहार लो॥

जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।



अंधेरो में भटका हुआ हूँ, ढूँढ रहा हूँ उज्ज्वल निशान।  
 'रोशन' किरण दिखा कर, मेरे पथ को निखार लो॥  
 जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो॥०॥

ॐॐ

## साई दामन में

मैं तो हर साँस में, ले रहा हूँ आप का नाम।  
 सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम॥

गर्द—ओ—गुबार में लथ—पथ, बहुत जी चुका हूँ मैं।  
 अब के अपने चरणों में, दे दे भक्ति का इनाम॥  
 सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम॥०॥

आपके तेज से, उज्ज्वल है फर्श—ओ—अर्श।  
 आप ज़र्रे—ज़र्रे में, कभी राम तो कभी श्याम॥  
 सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम॥०॥

सत गुरु आप जगत—गुरु, शुरू से आखिर तक आप ही आप।  
 आने दे शरण में, पीने दे भक्ति का जाम॥  
 सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम॥०॥

रेशन ही 'रेशन' आपका जमाल, जलाल मिहर—ओ—कमर का।  
हैं हज़ारों सजदे में, आचार—विचार से करें प्रणाम॥  
सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम॥०॥

ॐ

## साई महाराज

श्री साई के पावन द्वार पर, मुरादे पूरी हो जायें।  
खाली दामन आयें लेकर, भर—भर झोली लौट आयें॥

साई महाराज के चरणों में, सीस झुकाऊँ बार—बार।  
साई नाथ के चिंतन में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

दुःख ही दुःख क्यों आपके होते, सोते जागते क्यों हम रोते।  
साई महाराज के शरण में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

तेरे द्वारे आये हम, मिटाने आये मन का भ्रम।  
साई महाराज के आंगन में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

राम कृष्ण को देखूँ तुझ में, तुझ में ही देखूँ शिव की मूर्त।  
साई महाराज के अवगाहन में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

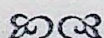


नैन बिछाये आस लगाये, पंथ निहारे प्रेम के मारे।  
साई महाराज के अभिनन्दन में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

व्याकुल मन में टाठें मारे, खारे लोभ की अंधी लहरें।  
साई महाराज के आराधन में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

काम क्रोध का मन में पहरा, काला कौआ द्वेष—भरा।  
साई महाराज के दामन में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥

ऐसा कर दे भगवन अबके, मैले दर्पण को 'रेशन' कर दे।  
साई महाराज के स्मरण में, सीस झुकाऊँ बार—बार॥



## पूजा का अवधान

हमें ज्ञान दे, ज्ञान दे,  
ज्ञान दे रे, साई ज्ञान दे।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
हमरी ओर ध्यान दे॥

भूखे, प्यासे, थके, हारे,  
आपके दूलारे शिरडी के द्वारे।

हम आपके चरणों के नीचे,  
भक्ती का वर्दान दे॥

मयूखाना ऐसा आप साकी हों,  
आप हों महफिल में ओर आप के दिवाने हों।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
श्रद्धा का जाम धान दे॥

न ललचाती लोभ की सूनहरी छाया,  
न माया का चम्कता जाल।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
दया का अनूपाण दे॥

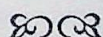
न हीरे मोती, न महल दुमहले,  
न रुपहले कोष की छन छन।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
आस्था का अस्मान दे॥

टेक लिया माथा हर दर पर,  
माथे पर खोद के कैसरी तिलक।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
पूजा का अवधाण दे॥



नश्वर काया पै पाप के ओले,  
शोले बन कर जूलस रहें।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
कृपा का राम भाण दे॥

प्रेम की लय में 'रेशन' हो जाऊँ,  
त्रप्त हो जाऊँ मुक्त होकर।  
हम आपके चरणों के नीचे,  
विश्वास की अज़ाँ दे॥



## सजदे में

साहिबा में तेरी बारगाह में, शीश जूका के चरणों में।  
तेरी चौखट पै सजदे में, शीश जूका के चरणों में॥

हो गई बाँवरी में तो बलहारी, वारी में ऐसी मूर्त पै।  
शाम सवेरे तेरे ध्यान में, शीश जूका के चरणों में॥

साधू संत और अलख जोगी, सब रोगी लोभ और माया के।  
द्वारिका माई के आंगन में, शीश जूका के चरणों में॥

पूजा की विधी में न जानू, पहचाँनू ना में वेद्य पुरान।  
बस तेरे नाम के अवधान में, शीश जूका के चरणों में॥

पंडित कहें में अज्ञानी, अनजानी पथ की पथिका।  
में तो आप के कृपा के अनुपाण में, शीश जूका के चरणों में॥

तेरा ही मंत्र पार उतारे, वारे न्यारे होंगे सारे।  
झोली फहला के असवन में, शीश जूका के चरणों में॥

अवधुन मेरे भस्म कर दे, रंग दे मुझे अपने ही रंग में।  
आप की शान की प्रार्थना में, शीश जूका के चरणों में॥

अबे 'रेशन' कर दे अपनी रहमत, सत चित आनंद बरसा दे।  
कस्म से कुछ और न मांगों में, शीश जूका के चरणों में॥

ॐ







# SAI CHARNU MEIN

(A Devotional Poetry)

By



## डॉ 'रोशन' सराफ

“डॉ रोशन सराफ” के कलम का एक और रंग जो रंग साई बाबा की भक्ति और श्रद्धा की सियाही से रंगा हुआ है। डॉ रोशन सराफ एक बहुमुखी कवि हैं। जिस ने कश्मीरी, अंग्रेजी और अब हिन्दी या यूँ कहें की हिन्दोस्तानी में एक बेट “साई चरणों में” साई बाबा के भक्तों को साईमय कर देता है। डॉ साहिब ने साई भजनू को संगीत की लय में सुरु की झंकार में पिरोया है। में मन की गहरायँ से भगवान जी से प्रार्थना करता हूँ, कि डॉ रोशन सराफ को अपने अनुग्रह के प्रसाद से सराबोर करें !

प्रो. ओमकार नाथ चंगू  
पटोली, जम्मू।